भगत नामदेव – सबद ३२

माइ न होती बापु न होता करमु न होती काइआ ॥

रागु रामकली, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ९७३

माइ न होती बापु न होता करमु न होती काइआ ॥
हम नही होते तुम नही होते कवनु कहाँ ते आइआ ॥१॥
राम कोइ न किस ही केरा ॥
जैसे तरवरि पंखि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥
चंदु न होता सूरु न होता पानी पवनु मिलाइआ ॥
सासतु न होता बेदु न होता करमु कहाँ ते आइआ ॥२॥
खेचर भूचर तुलसी माला गुर परसादी पाइआ ॥
नामा प्रणवै परम ततु है सतिगुर होइ लखाइआ ॥३॥३॥

सार: अस्तित्व और पहचान का विषय बहुत गहरा और जटिल है। किसी बच्चे के जन्म से पहले, उसमें 'मैं' का कोई बोध नहीं होता, निजी इतिहास या सोचने-समझने के लिए कोई अनुभव नहीं होता। हमारी पहचान जन्म के बाद ही आकार लेना शुरू करती है जो जीवन के अलग-अलग अनुभवों से बनती है। वंश, उपलब्धियों और स्वयं के बारे में हमारी धारणाएँ कोई अंतिम सत्य नहीं हैं, बल्कि यह उन परिस्थितियों का मिला-जुला रूप हैं जो हमारे जीवन में समय के साथ आती हैं और अंततः विलीन भी हो जाती हैं। इस गहन सच्चाई को समझने से हम पर अहंकार का असर कम होता है और हमें विरासत में मिली सीमित धारणाओं से आगे देखने की समझ मिलती है। यह हमें बेहतर नज़रिए से चीज़ों को समझने का अवसर देता है। हमारे आस-पास की दुनिया से हमारे जुड़ाव को यह बढ़ाता है जिससे हम व्यक्तिगत पहचान की सीमाओं और 'मैं' एवं दूसरेपन के बीच के फ़र्क़ से ऊपर उठकर, निराकार अस्तित्व का अनुभव कर पाते हैं।

माइ न होती बापु न होता करमु न होती काइआ ॥
जब न माता थी, न पिता, न कर्म और न ही कोई भौतिक शरीर। यह पहचान और कारण-कार्य के नियमों के बनने से पहले की शून्यता पर विचार करने का प्रतीक है।

हम नही होते तुम नही होते कवनु कहाँ ते आइआ ॥१॥
जब मेरा अस्तित्व नहीं था और तुम्हारा भी नहीं, तब कौन कहाँ से आया? यह सवाल हमें व्यक्तिगत पहचान के मूल तत्व और निराकार अवस्था में 'स्वयं' और 'दुसरे' के बीच के अंतर को समझने की चुनौती देता है। (१)

राम कोइ न किस ही केरा ॥
सर्वव्यापी ऊर्जा न तो किसी की संपत्ति है और न ही उस पर किसी का कोई अधिकार है। यह बताता है कि सृष्टि का स्रोत निरपेक्ष व्यक्तित्वहीन है और उस पर किसी भी पहचान का दावा या अधिकार नहीं हो सकता।

जैसे तरवरि पंखि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे किसी पेड़ पर पक्षी का बसेरा। थोड़े समय के लिए ठहरने का यह रूपक भौतिक संसार की नश्वरता को दर्शाता है। (१)(विराम)

चंदु न होता सूरु न होता पानी पवनु मिलाइआ ॥
जब न चाँद था, न सूरज, और न ही पानी और हवा का मेल। यह द्वैत और जीवन-मृत्यु की अवधारणा के बोध से पहले की अवस्था को दर्शाता है।

सासतु न होता बेदु न होता करमु कहाँ ते आइआ ॥२॥
जब कोई शास्त्र या वेद नहीं थे, तब कर्म कहाँ से आए? यह सवाल हमें अच्छे और बुरे के विचार पर सोचने के लिए प्रेरित करता है और यह संकेत देता है कि यह विचार किसी जन्मजात सत्य से नहीं बल्कि हमारे अपने मानसिक निर्माण की सोच से पैदा होते हैं। (२)

खेचर भूचर तुलसी माला गुर परसादी पाइआ ॥
खेचर अर्थात साँस पर नियंत्रण, भूचर अर्थात ध्यान केंद्रित करना और तुलसी माला अर्थात अनुशासन में महारत, आध्यात्मिक समझ से ही हासिल होती है। यह दर्शाता है कि मन की स्पष्टता कर्मकांडों या बाहरी साधनों से नहीं बल्कि आत्म-चिंतन से आती है।

नामा प्रणवै परम ततु है सतिगुर होइ लखाइआ ॥३॥३॥
नामदेव विनम्रता से कहते हैं कि परम सत्य यही है जो ज्ञान का सत्य अनुभव होने पर प्रकट होता है। यह बल देता है कि वास्तविकता का अनुभव केवल सैद्धांतिक नहीं है बल्कि यह हमारे अंतर्मन द्वारा सीधा निर्देशित और आंतरिक अनुभव है। (३)(३)

तत्त्व: भक्त नामदेव इस बात पर विशेष बल देते हैं कि जब हम समस्त उपाधियों, संबंधों और शर्तों को हटाकर उस शून्य अवस्था को पहचानते हैं तभी अस्तित्व के परम तत्त्व का अनुभव होता है। वह कहते हैं कि हम जिसे भी असली मानते हैं, जैसे हमारे रिश्ते, शरीर, धर्मग्रंथ, धन और काम, वह सब अस्थायी हैं। अपनापन या मालिकाना हक़ की भावना को छोड़कर, हम स्वयं को अहं की उस मांग से मुक्त कर सकते हैं जो सदा निश्चितता चाहती है। यह समझ हमें 'मैं' की उस सीमित सोच से ऊपर उठने में मदद करती है जो विशेष मूल और समाज की अस्थायी धारणाओं से जुड़ी होती है। इस सच्चाई को अपनाकर हम स्वयं को और दुनिया में अपनी जगह को देखने का अपना दृष्टिकोण बदल सकते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com